ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-10*November- 2021
Innovation The Research Concept

अलीगढ़ जनपद में कृषि साख सम्बन्धी समस्याऐं

Agricultural Credit Problems In Aligarh District

Paper Submission: 05/11/2021, Date of Acceptance: 15/11/2021, Date of Publication: 16/11//2021

सुशील कुमार
शोध छात्र,
अर्थशास्त्र विभाग,
डी0एस0 कालेज,
अलीगढ़,
उत्तर प्रदेश, भारत

मौहम्मद महमूद आलम
एसो0 प्रोफेसर,
अर्थशास्त्र
डी0एस0 कालेज, अलीगढ़,
उत्तर प्रदेश, भारत

Abstract

कृषि साख एवं ग्रामीण विकास के मध्य सम्बन्धों के विश्लेषण पर कृषि साख सम्बन्धी समस्याओं पर ध्यान देना स्वाभाविक है। बैंकिंग सुधारों के बाद भी ग्रामीण क्षेत्र कृषि सम्बन्धी समस्याओं का सामना कर रहा है। ग्रामीणों के सामने व्यक्तिगत स्तर तथा सामूहिक स्तर पर कृषि साख सम्बन्धी समस्याऐं पायी गयी हैं। अलीगढ़ जनपद में वित्तीय संस्थाओं की स्थापना, संचालन, तथा उनका क्रियान्वयन बड़े स्तर पर पाया गया है। जनपद में व्यापारिक बैंक, सरकारी बैंक तथा निजी क्षेत्र के बैंक कार्यरत हैं नाबार्ड का कार्यालय भी अलीगढ़ में हैं। वर्ष 2018-19 के अनुसार प्रति व्यावसायिक बैंक शाखा पर जनसंख्या 17374.47 पायी गयी। प्रति लाख जनसंख्या पर प्रा0 कृषि सहकारी ऋण समितियों की संख 2.99 पायी गयी। अलीगढ़ जनपद में कृषि साख सम्बन्धी निम्न समस्याओं को चिन्हित किया गया हैं

जनपद में कृषि जोतों का आकार छोटा पाया गया है तथा इनमें निरन्तर गिरावट जारी है। छोटी जोतों पर कृषि साख का प्रभाव कम होता जाता है। ग्रामीणों की अशिक्षा एवं परम्परागत व्यवस्था में रहने, कृषि ऋण् म्ें विचौलियें की उपस्थिति के कारण भी अनेक प्रकार की समस्याऐं उत्पन्न होती है। ग्रामीणों की आय का निम्न स्तर तथा बैंकों की पक्षपातपूर्ण व्यवहार एवं अन्य सामाजिक-राजनैतिक कारणां से भी कृषि साख एवं ग्रामीण विकास के मध्य अनेक प्रकार की जटिलताऐं उत्पन्न हुई है जो कृषि साख के प्रभाव को कम करती हैं। इस समस्याओं के कारण ग्रामीण विकास पर कृषि साख के प्रभावों में अनेक आधार पर अन्तर पाया गया है।

On the analysis of the relationship between agricultural credit and rural development, it is natural to focus on the problems related to agricultural credit. Even after the banking reforms, the rural sector is facing agricultural problems. Problems related to agricultural credit have been found in front of the villagers both at the individual level and at the collective level. The establishment, operation, and implementation of financial institutions have been found on a large scale in Aligarh district. Commercial banks, government banks and private sector banks are functioning in the district, the office of NABARD is also in Aligarh. According to the year 2018-19, the population per commercial bank branch was found to be 17374.47. The number of private agricultural cooperative credit societies per lakh population was found to be 2.99. The following problems related to agricultural credit have been identified in Aligarh district. The size of agricultural holdings in the district has been found to be small and there is a continuous decline in them. The impact of agricultural credit on small holdings diminishes. Due to the illiteracy of the villagers and living in the traditional system, the presence of middlemen in agricultural credit also causes many problems. Due to the low level of income of the villagers and the biased behavior of banks and other socio-political reasons, many types of complications have arisen between agricultural credit and rural development, which reduce the effect of agricultural credit. Due to these problems, differences have been found in the effects of agricultural credit on rural development on several grounds.

मुख्यशब्दः कृर्षि साख, कृषि उत्पादकता, ग्रामीण आय, बैंकिंग सुधार ।
Keywords: Agricultural Credit, Agricultural Productivity, Rural Income, Banking Reforms.

प्रस्तावना

ग्रामीण अर्थव्यवस्था में कृषि साख से सम्बन्धित समस्याओं का इतिहास काफी पुराना है। स्वतंत्रता के बाद भी अनेक प्रकार के राजनैतिक व आर्थिक सुधारों के बाद वर्तमान में भी अर्थव्यवस्था कृषि साख सम्बन्धी विभिन्न प्रकार की समस्याओं से ग्रसित है। सरकारों द्वारा समय-समय पर अनेक प्रकार से बैंकिंग सुधार, वित्तीय सुधार तथा संरचनात्मक सुधार हेतु प्रयास किये गये लेकिन ग्रामीण समाज एवं अर्थव्यवस्था की संरचनात्मक प्रवृत्तियों के कारण कृषि साख की समस्याऐं वर्तमान में भी अपना अस्तित्व बनाये हुए हैं। सरकार द्वारा कृषि साख के प्रभावों को अधिक उत्पादक एवं त्वरित बनाने के लिए अनेक कार्यक्रम एवं योजनाओं का संचालन किया तथा इस दिशा में बड़ी सीमा तक सफलता भी मिली है।

ग्रामीण अर्थव्यवस्था कृषि से अत्यधिक प्रभावित होते हुए अनेक प्रकार के अवयवों पर आधारित है जिससे इसकी प्रवृत्ति परिवर्तनशील एवं अस्थिर रहती हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में आय, रोजगार, तकनीकी, शिक्षा, स्वास्थ्य, परिवहन, सूचना सम्बन्धी परिवर्तनों के कारण कृषि साख का प्रभाव बढ़ा है। लेकिन व्यक्तिगत तथा सामूहिक व्यवस्थाओं के कारण कृषि साख सम्बन्धी समस्याऐं वर्तमान में भी विद्यमान है जिनका विश्लेषण प्रस्तुत शोध की विषयवस्तु है।

शोध समस्या

प्रस्तुत शोध हेतु शोध समस्या निम्नवत है- "कृषि व्यवस्था तथा ग्रामीण आर्थिक विकास के मध्य सम्बन्धों को उपयोगी एवं व्यापक बनाने के लिए एक कार्यात्मक योजना तय करनी होती है जिसके मार्ग में अनेक प्रकार की बाधाऐं आती है जो ग्रामीण अर्थव्यवस्था की प्रकृति पर निर्भर करती है। ग्रामीण अर्थव्यवस्था में क्षेत्रीर्य ऍिआाक विषमता के कारण ही वर्तमान में कृषि साख की तीव्र आवश्यकता पायी गयी है।"

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध के मुख्य उद्देश्य निम्नवत हैं।

1. अध्ययन क्षेत्र की वित्तीय तथा कृषिगत प्रवृत्तियों का अध्ययन करना।
2. कृषि साख सम्बन्धी समस्याओं को चिन्हित कर उनका विश्लेषण करना।
3. कृषि साख के प्रभावों को अधिक उपयोगी बनाने हेतु सुझाव देना।

प्रस्तुत शोध की परिकल्पना निम्नवत निर्धारित की गयी है।

शोध परिकल्पना

प्रस्तुत शोध की परिकल्पना निम्नवत निर्धारित की गयी है।
"कृषि साख का ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर पड़ने वाले वांछित तथा वास्तविक प्रभावों के मध्य अन्तर पाया जाता है जिसका कारण है कि कृषि साख द्वारा ग्रामीण आर्थिक विकास के कुछ ही तत्वों को प्रभावित किया जाता है तथा ये तत्व एक दूसरे से अधिक एवं आवश्यक रूप से अन्तप्रभावित नहीं रहते हैं।"

शोध विधि

प्रस्तुत शोध विधि में उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ जनपद को अध्ययन हेतु चुना गया है। जनपद के खैर विकास खण्ड से 10 ग्रामों को दैव निदर्शन विधि से चयनित किया गया हैं प्रत्येक ग्राम से 20-20 किसान परिवारों का चयन कर अध्ययन पूर्ण किया गया है। प्राथमिक व द्वितीयक समंकों का प्रयोग किया गया है। प्राथमिक समंकों को अनूसूची तथा व्यक्तिगत साक्षात्कार के माध्यम से संकलित किया गया हैं अध्ययन में विश्लेषण की अन्वेषणात्मक व विवरणात्मक पद्धति को अपनाया गया हैं खैर विकास खण्ड के दस ग्रामों में- अकरावत, चमन नगरिया, सूजापुर, अण्डला, रसूलपुर, रतनपुर, मानपुर, रूपपुर, नाइल तथा नरायनपुर को चयनित किया गया है।

साहित्य का पुनः अवलोकन

प्रस्तुत शोध समस्या को अधिक स्पष्ट एवं तार्किक बनाने के लिए अनेक विद्वानों के आर्थिक साहित्य का अध्ययन किया गया है। सिंह पूनम (2002) कुमार भूपेन्द्र (2004), जालान विमल (2008), देवी गिरिजा (2008), कुमार महेन्द्र (2009), मिश्र सुप्रिया (2010), मीनाक्षी, आर0 (2012), जायसवाल सरिता (2012), शर्मा ममता (2012), कुमार महेन्द्र (2018), सिंह कमल (2018) के ग्रामीण विकास एवं कृषि साख से सम्बन्धित साहित्य के विभिन्न पक्षों का अध्ययन किया गया।

अलीगढ़ जनपद में वित्तीय संस्थाओं का ढाँचा

उत्त प्रदेश के अलीगढ़ जनपद का वित्तीय ढाँचा अत्यन्त मजबूत एवं विस्तुत है। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार जनपद की कुल जनसंख्या 3673849 थी जिसमें अनुसूचित जाति की जनसंख्या 755254 थी। अलीगढ़ जनपद की ग्रामीण अर्थव्यवस्था 12 विकास खण्ड तथा 1210 ग्रामों में विभाजित है। वर्ष 2018-19 के अनुसार जनपद में राष्ट्रीयकृत बैंकों की कुल शाखायें 191 थी, अन्य बैंक शाखाओं की संख्या 85 तथा सहकारी बैंक शाखाओं की संख्या 13 थी। अलीगढ़ जनपद में सहकारी कृषि एवं ग्राम्य विकास बैंक की 7 शाखाऐं संचालित हैं। प्रारम्भिक कृषि ऋण सहकारी समितियों की संख्या 2018-19 में 125 थी जिनके सदस्यों की कुल संख्या 168000 थी। अलीगढ़ में राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक (नावार्ड) का

कार्यालय भी संचालित है। जनपद में सरकारी, सहकारी तथा निजी क्षेत्र के बैंक संचालित है। इसके साथ गैर-बैंकिंग संस्थाऐं भी वित्तीय क्षेत्र में कार्य कर रही हैं जो ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान करने में संलग्न हैं।

अलीगढ़ जनपद में वित्तीय व्यवस्था से सम्बन्धित विभिन्न संकेतकों को निम्न तालिका 1 द्वारा दर्शाया गया है।

तालिका 1

अलीगढ़ जनपद में वित्तीय व्यवस्था की स्थिति

क्र.सं0	मद	संकेतक (संख्या)	
		2017–2018	2018–19
1.	प्रति लाख जनसंख्या पर प्रा0कृ0 सहाकरी ऋण समितियों की संख्या	3.04	2.99
2.	प्रति लाख जनसंख्या पर सहकारी कृषि एवं ग्राम्य विकास बैंकों की संख्या	0.17	0.17
3.	प्रति लाख जनसंख्या पर कृषि सहकारी क्रय विक्रय समितियों की संख्या	0.12	0.12
4.	कुल ऋण वितरण में प्राथमिक क्षेत्र के ऋण वितरण का प्रतिशत	100.00	252.28
5.	प्रति बैंक वाणिज्यिक एवं ग्रामीण शाखा पर जनसंख्या (हजार में)	12.41	12.63
6.	प्रति व्यावसायिक बैंक शाखा पर जनसंख्या (समस्त विकास खण्ड)	17374.47	17374.47

स्रोतः जिला सांख्यिकी पत्रिका, अलीगढ़ 2018-19

उपर्युक्त तालिका के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि अलीगढ़ जनपद के ग्रामीण क्षेत्र में कृषि साख की आवश्यकता की पूर्ति हेतु अनेक स्तरों पर बैंक तथा सहकारी समितियां संचालित है। जनपद में कुल ऋण वितरण मंे प्राथमिक क्षेत्र में ऋण वितरण की उपलब्धि अत्यधिक सराहनीय पायी गयी है। जनपद में प्रति वाणिज्यिक बैंक एवं ग्रामीण शाखा पर जनसंख्या का अनुपात वर्ष 2018-19 में 12.63 हजार पाया गया। वही समस्त विकास खण्ड स्तर पर प्रति व्यावसायिक बैंक शाखा पर जनसंख्या का अनुपात 17374.47 पाया गया।

अलीगढ़ जनपद में कृषि व्यवस्था -अलीगढ़ जनपद में कृषि साख व ग्रामीण आर्थिक विकास के मध्य अन्तर्सम्बन्ध को स्पष्ट करने के लिए अनेक अवयवों/तत्वों को स्पष्ट करना आवश्यक पाया गया हैं इन तत्त्वों के माध्यम से कृषि साख सम्बन्धी समस्याओं का भी अनुपात लगाया जा सकता हैं जनपद में कृषि सम्बन्धी प्रमुख प्रवृत्तियां निम्नवत हैं।

तालिका2

जनपदकी कृषि सम्बन्धी प्रवृत्तियां

क्र.सं0	मद	संकेतक (वर्ष)	
		2017–2018	2018–19
1.	शुद्ध बोया गया क्षेत्रफल (हजार हेक्टे.)	305	–
2.	एक बार से अधिक बोया गया क्षेत्रफल (हजार हेक्टेयर)	261	–
3.	शुद्ध सिंचित क्षेत्रफल (हजार हेक्टे0)	304	–
4.	सकल सिंचित क्षेत्रफल (हजार हेक्टे0)	486	–
5.	खाद्यान्न उत्पादन (हजार मी0टन)	1470.65	–
6.	गन्ना उत्पादन (हजार मी0टन)	543.38	–
7.	तिलहन उत्पादन (हजार मी0टन)	39.51	–
8.	आलू उत्पादन (हजार मी0टन)	761.37	–
9.	नहरों की लम्बाई (किमी0)	–	1560
10.	राजकीय नलकूप (संख्या)	–	641
11.	निजी नलकूप एवं पम्प सैट (संख्या)	–	69106
12.	कुल पशुधन (संख्या	1544427	–
13.	सामान्य वर्षा (मिमी)	–	692.0
14.	वास्तविक वर्षा (मिमी.)	–	549.3

स्रोतः जिला सांख्यिकी पत्रिका, अलीगढ़ 2019

उपर्युक्त तालिका के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि वर्ष 2018-19 में जनपद में निजी नलकूप तथा पम्पसैटस की संख्या 69106 थी तथा कुल पशुधन की संख्या वर्ष 2017-18 में 1544427 थी। जनपद में सकल सिंचित क्षेत्रफल वर्ष 2017-18 में 486 हजार हेक्टेयर था। वर्ष 2017-18 में कुल खाद्यान्न उत्पादन 1470.65 हजार मी0 टन था।

वर्ष 2011 के अनुसार कुल मुख्य ग्रामीण कर्मकारों का जनसंख्या से अनुपात 23.43 प्रतिशत था। कृषि श्रमिक कर्मकारों का कुल जनसंख्या से प्रतिशत 4.05 पाया गया। कुल मुख्य कर्मकारों में कृषक का अनुपात 29.16 प्रतिशत तथा कृषि श्रमिकों का अनुपात 17.2 प्रतिशत पाया गयां वर्ष 2015-6 के अनुसार समस्त जोतों में लघु एवं सीमान्त जोतों का प्रतिशत 86.53 था वही समस्त जातों के अन्तर्गत क्षेत्रफल में लघु एवं सीमांत जोतों का औसत आकार 0.39 हेक्टेयर पाया गया वही समस्त जोतों का औसत आकार 0.99 हेक्टेयर पाया गया।

वर्ष 2012 के अनुसार प्रति 100 हेक्टेयर क्षेत्रफल पर पशुधन संख्या 415.99 पायी गयी तथा प्रति 1000 जनसंख्या पर पशुधन संख्या 410.86 पायी गयी। प्रति 100 जनसंख्या पर दूध देने वाले पशुओं की संख्या 17.01 पायी गयी।

कृषि साख सम्बन्धी समस्याएँ

अलीगढ़ जनपद में कृषि साख सम्बन्धी समस्याओं में व्यक्तिगत तथा सामूहिक प्रकृति की समस्याऐं पायी गयी हैं जिनका विश्लेषण निम्न बिन्दुओं के आधार पर किया जा सकता है।

कृषि जोतों का छोटा आकार

अलीगढ़ जनपद में कृषि जोतों का छोटा आकार कृषि साख के लिए एक समस्या बन गया है। संयुक्त खातों का होना, कृषि जोतों का उपविभाजन एवं अपखण्डन के कारण कृषि साख स्वीकृत कराने के लिए अनेक प्रकार की औपचारिकताऐं करानी होती है तथा कृषि साख की उच्चतम सीमा में कमी आ जाती है जिससे कृषक वित्तीय संस्थानों/बैंकों के प्रति उदासीन व्यवहार करने लगते हैं जिससे कृषि साख का प्रभाव ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर कम होने लगता है। दूसरी ओर छोटी जोतों के कारण बैंकिंग प्रणाली में भी समय की लागत बढ़ जाती हैं इससे कृषि साख की राशि समान होने पर बैंक ग्राहकों की संख्या में वृद्धि हो जाती है।

ग्रामीण अशिक्षा एवं परम्परागत व्यवस्था

विकास के वर्तमान दौर में भी ग्रामीण किसान अशिक्षा से ग्रसित हैं तथा परम्परागत व्यवस्था में भरोसा रखते हैं। तकनीकी व्यवस्था से दूर होने के कारण बैंकिंग सुधारों का पूरा लाभ लेने में असमर्थ हैं। अशिक्षा एवं परम्परागत व्यवस्था के कारण ग्रामीण कृषि साख से सम्बन्धित अनेक प्रकार की कठिनाईयां उत्पन्न होती हैं जो कृषि साख के प्रभाव को कम करती हैं। अशिक्षा तथा परम्परागत व्यवस्था कृषि साख तथा कृषि विकास के मध्य अन्तर पैदा करती है।

विचौलियों/मध्यस्थों की उपस्थिति

आर्थिक सुधारों के साथ ग्रामीण अर्थव्यवस्था वर्तमान में भी विचौलियों तथा मध्यस्थों का शिकार है। किसान तथा बैंकिंग प्रणाली के मध्य अनेक प्रकार से विचौलिये क्रिया कलाप करते हैं जो कृषि साख से सम्बन्धित कठिनाईयां पैदा करते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में अल्पशिक्षित तथा अशिक्षित लोग जानबूझकर बैंकिंग प्रणाली में मध्यस्थों का सहारा लेते हैं जो विभिन्न प्रकार से शोषित किये जाते हैं। शिक्षित लोग भी बैंकिंग अधिकारियों एवं कर्मचारियों के षणयंत्र का शिकार होते पाये गये हैं। वर्तमान समय में राजनैतिक व्यवस्था के आधार पर इन बिचौलियों तथा मध्यस्थों को समाजसेवी की संज्ञा दी जाने लगी है। बैंकिंग प्रणाली में बिचौलिये भृष्टाचार का कारण तथा माध्यम हैं।

आय का निम्न स्तर

ग्रामीण अर्थव्यवस्था में कृषि साख से सम्बन्धित एक अन्य महत्वपूर्ण समस्या जुड़ी हुई हैं जो ग्रामीणों की आय के स्तर का निम्न होने से सम्बन्ध रखती हैं ग्रामीणों की आय का निम्न स्तर तथा कृषि साखा की मात्रा के मध्य सकारात्मक व क्रियात्मक सम्बन्ध है। आय का निम्नस्तर कृषि साख की सीमा को सीमित करता है। इसी कारण ग्रामीण अर्थव्यवस्था में सीमान्त तथा भूमिहीन श्रमिक बैंकिंग प्रणाली से कृषि साख के लाभ से बंचित रहते हैं।

पक्षपातपूर्ण व्यवहार तथा भ्रष्टाचार

बैंक अधिकारियों तथा कर्मचारियों का पक्षपातपूर्ण व्यवहार तथा भृष्टाचार कृषि साख की उपलब्ध्ता व प्रभाव को प्रतिकूल रूप से प्रभावित करता है। जातिवाद, वर्गवाद, राजनीतिक पक्ष, आर्थिक स्तर, सम्बन्धी तथा अन्य कारणों से कृषि साख के सम्बन्ध में किसानों के साथ भेदभावपूर्ण व्यवहार किया जाता हैं

अन्य समस्याएं

अलीगढ़ जनपद में कृषि साख से सम्बन्धित अन्य प्रकार की समस्याऐं - भौगोलिक, मौसमी, परमपरागत, क्षेत्रीय, समस पायी जाती हैं जिनके कारण कृषि साख आज भी ग्रामीण क्षेत्र के लिए अत्यन्त उपोगी हैं।

सुझाव

ग्रामीण अर्थव्यवस्था में कृषि साख सम्बन्धी समस्याओं के समाधान हेतु बैंकिंग समस्या समाधान दिवस अथवा इस प्रकार के अन्य दिवस का आयोजन जिला या तहसील स्तर पर किया जाना चाहिए। ग्रामीण साख के प्रभावों को अधिक प्रभावी बनाने के लिए जनता/ग्रामीणों के मध्य सकारात्मक तथा प्रेरणात्मक संचेतना पैदा करने के लिए ग्राम/क्षेत्रीय स्तर पर स्वयंसेवी समस्याओं को प्रोत्साहित किया जाचा चाहिए।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध के प्रमुख निष्कर्ष निम्नवत हैं। अलीगढ़ जनपद में बैंकिंग व्यवस्था का ढाँचा मजबूत है जिससे कृषि साख सम्बन्धी समस्याओं की प्रकृति परम्परागत है। कृषि साख की तकनीकी समस्याओं का एक बड़ी सीमा तक निराकरण हुआ है। कृषि साख सम्बन्धी समस्याऐं परिवर्तनशील पायी गयी हैं जो समय-समय पर बदलती रहती हैं समस्याओं के बदलने की प्रवृत्ति के कारण कृषि साख के प्रभावों में भी अन्तर पाया जाता हैं कृषि साख के प्रभावों मे यह अन्तर वितरणात्मक एवं गहनात्मक दोनों रूपों में पाया जाता है। कृषि साख की कुछ समस्याऐं संरचनात्मक प्रकार की हैं जो ग्रामीण अर्थव्यवस्था की प्रकृति एवं उसकी बदलती प्रवृत्ति से प्रभावित होती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *कपिल, एच0के0 (2001) अनुसंधान विधिया - व्यवहारपरक विज्ञानों में, एच0पी0 भार्गव बुक हाउस, कचहरीघाट, आगरा।*
2. *सिंह, पूनम (2002) निर्वल वर्गों के उत्थान में बैंकों का योगदान, साहित्य संस्थान, उत्तरांचल कालोनी, गाजियाबाद।*
3. *कुमार, महेन्द्र एवं गोपाल स्वरूप शर्मा (2018) भारतीय कृषि अर्थशास्त्र, सनराइज पब्लिकेशन, दिल्ली।*
4. *कुमार एवं शमां (2017) ग्रामीण विकास के तत्व, सनराइज पब्लिकेशन, दिल्ली।*
5. *गोविल, आर0के0 एवं दयाल (2014) कृषि अर्थशास्त्र, लक्ष्मी नारायण आगरा।*
6. *त्रिवेदी एवं शुक्ला (2012) रिसर्च मैथ्योडोलॉजी, रिसर्च पब्लिकेशन्स, त्रिपोलिया बाजार, जयपुरं*
7. *अखिलेश एस0 एवं संध्या शुक्ल (2010) भारत में ग्रामीण विकास, गायत्री पब्लिकेशन विछिया-रीवा, म0प्र0*
8. *यूनुस मुहम्मद (2008) गरीबों का बैंकर, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली।*
9. *योजना - प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, नई दिल्लीं*
10. *कुरूक्षेत्र - प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, नई दिल्लीं*
11. *वार्ता - भारतीय आर्थिक शोध संस्थान, प्रयागराज (इलाहाबाद)*
12. *समाज विज्ञान शोध पत्रिका, स्टार प्रिंटिंग प्रेस अमरोहा (जे0पी0 नगर)*
13. *The Indian Economic Journal*
14. *UPUEA Economic Journal*